बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद
शोध- प्रस्ताव का प्रारूप

शीर्षक:

“ सोशल मीडिया और नैतिकता: एक दार्शनिक अध्ययन”

(Social Media and Ethics: A Philosophical Study)

शोध निर्देशक

डॉ. सुनंदा कुमारी

विभागाध्यक्ष

दर्शनशास्त्र विभाग

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

झारखंड -826001

शोधार्थी

अजय माहातो

स्नातकोत्तर दर्शनशास्त्र विभाग

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

1. बिषय प्रवेश (Introduction):

आधुनिक युग में सोशल मीडिया ने हमारे संचार के ढंग को पूरी तरह से परिवर्तित कर दिया है। इसके माध्यम से हम विश्व भर में जुड़ सकते हैं, अपने विचारों को साझा कर सकते हैं, और अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं को दुनिया के साथ साझा कर सकते हैं। हालांकि, इस संचार के माध्यम के विकास के साथ ही कुछ नए नैतिक और दार्शनिक प्रश्न उत्पन्न हुए हैं। यह अध्ययन एक विस्तृत परिचय प्रस्तुत करता है कि सोशल मीडिया और नैतिकता के इस संबंध को कैसे समझा जा सकता है। हम इसे विभिन्न दार्शनिक दृष्टिकोणों से देखेंगे, जिसमें नैतिक उत्थान, व्यक्तिगत अधिकार, सामाजिक न्याय, और सत्यता के मूल्यों का विचार किया जाएगा। इस अध्ययन में, हम सोशल मीडिया के नैतिकता पर प्रभाव के कुछ मुख्य क्षेत्रों को विचार करेंगे, जैसे गोपनीयता, डेटा सुरक्षा, विचार की स्वतंत्रता, और सामाजिक न्याय। हम इसे व्यक्तिगत, सामाजिक, और दार्शनिक मूल्यों के संदर्भ में देखेंगे और इसके साथ हमारे सामाजिक और नैतिक धारावाहिकों को कैसे प्रभावित किया जा सकता है, इस पर विचार करेंगे। इस अध्ययन के माध्यम से हम एक गहरे समझ प्राप्त करेंगे कि सोशल मीडिया के विकास ने हमारी नैतिक सोच और सामाजिक अभिवृद्धि के साथ कैसे इंटरैक्ट किया है। यह अध्ययन हमें सोशल मीडिया के उपयोग के नैतिक परिप्रेक्ष्य को समझने में मदद करेगा और हमें इस नए संचार के धार्मिक और नैतिक मामलों को समझने में मदद करेगा।

2. साहित्य की प्रारंभिक समीक्षा (Preliminary Review of Literature):

"The Age of Surveillance Capitalism: The Fight for a Human Future at the New Frontier of Power" by Shoshana Zuboff: यह पुस्तक आधुनिक सोशल मीडिया के डेटा संग्रह और गोपनीयता के विषय में व्यापक अध्ययन प्रस्तुत करती है। इसमें वे बताती हैं कि कैसे सोशल मीडिया ने व्यक्तिगत डेटा का उपयोग करके उपभोक्ता के साथ निजी जानकारी का अनाधिकृत उपयोग किया जा रहा है, और इससे नैतिकता के सवाल उठते हैं। "The Filter Bubble: What the Internet Is Hiding from You" by Eli Pariser: यह पुस्तक सोशल मीडिया और इंटरनेट पर फिल्टर बबल के बारे में चर्चा करती है, जिसमें उपभोक्ताओं को उनके पूर्वाग्रह और रुचियों के आधार पर संप्रेषित जानकारी प्रदान की जाती है। यह पुस्तक व्यक्तिगत और सामाजिक नैतिकता के संदर्भ में सोशल मीडिया के प्रभाव पर विचार करती है।"The Ethics of Authenticity" by Charles Taylor : इस पुस्तक में टेलर ने आधुनिक जीवन में वास्तविकता की नैतिकता पर ध्यान केंद्रित किया है। उन्होंने व्यक्तिगत और सामाजिक अवधारणाओं को नैतिकता के संदर्भ में देखा है, जिसमें सोशल मीडिया के उपयोग का भी समावेश है।"The Shallows: What the Internet Is Doing to Our Brains" by Nicholas Carr : यह पुस्तक विचार करती है कि इंटरनेट और सोशल मीडिया के नियमित उपयोग से हमारे मस्तिष्क को कैसे प्रभावित किया जा रहा है। यह अध्ययन सोशल मीडिया के उपयोग के नैतिक पहलुओं को भी विचार में लाता है। "The Righteous

Mind: Why Good People Are Divided by Politics and Religion" by Jonathan Haidt : यह पुस्तक नैतिकता के संदर्भ में मानव मन की विज्ञान को अध्ययन करती है। हाइड्ट विभिन्न सामाजिक मामलों और विचारों को समझने के लिए मन की विभिन्न दिशाओं को प्रस्तुत करते हैं, जो सोशल मीडिया के नैतिक परिप्रेक्ष्य को समझने में मदद कर सकते हैं। ये पुस्तकें विभिन्न दार्शनिक और नैतिकता के माध्यम से सोशल मीडिया के प्रभाव को विस्तार से समझने में मदद कर सकती हैं। इनका अध्ययन सोशल मीडिया और नैतिकता के बीच संबंध को गहराई से समझने में महत्वपूर्ण हो सकता है।

3. समस्या का विधान (Statement of the Problem):

इस अध्ययन में हम सोशल मीडिया के नैतिकता पर प्रभाव को विश्लेषण करेंगे। हम गोपनीयता, डेटा सुरक्षा, विचार की स्वतंत्रता, और सामाजिक न्याय जैसे मुख्य क्षेत्रों में समस्याओं का मूल्यांकन करेंगे। सोशल मीडिया के उच्च उपयोग के कारण, उसका प्रभाव लोगों के व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन पर परिप्रेक्ष्य में बदल गया है। लेकिन इस विकास के साथ, नैतिकता के संदर्भ में कई समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं, जैसे गोपनीयता की कमी, विभिन्न डिजिटल प्लेटफ़ॉर्मों पर विचार की स्वतंत्रता की प्रतिबंधन, और असत्य या भ्रामक जानकारी का प्रसार। यह अध्ययन महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें सोशल मीडिया के उपयोग के नैतिक परिप्रेक्ष्य को समझने में मदद कर सकता है। इसके माध्यम से हम उन नैतिक दिलेम्मों को समझ सकते हैं जो सोशल मीडिया के साथ जुड़े हैं और साथ ही सामाजिक न्याय, व्यक्तिगत अधिकार, और सत्यता के मूल्यों को बनाए रखने के लिए सहायक उपाय तैयार कर सकते हैं।इस प्रकार, यह अध्ययन सोशल मीडिया और नैतिकता के बीच संबंध को समझने और समाधान करने के लिए महत्वपूर्ण है।

4. समस्या की अनुसंधान (Problem to be Investigated):

सोशल मीडिया पर उपयोगकर्ताओं की गोपनीयता की स्थिति को लेकर अनुसंधान करें। इसमें उपयोगकर्ताओं के डेटा का उपयोग, उनकी गोपनीयता की संरक्षण की नीतियों का अध्ययन शामिल होगा। सोशल मीडिया पर विचार की स्वतंत्रता के प्रति विचार करें। इसमें सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्मों द्वारा विचारों और जानकारी के प्रसार की प्रक्रिया का अध्ययन शामिल होगा। सोशल मीडिया पर सामाजिक न्याय की स्थिति का अध्ययन करें। इसमें विभिन्न समुदायों और अनुयायियों के साथ न्याय के प्रदान के प्रति सोशल मीडिया के प्रभाव का विश्लेषण शामिल होगा। सोशल मीडिया पर भ्रामक जानकारी के प्रसार की समस्या को अध्ययन करें। इसमें गलत और भ्रामक जानकारी के प्रसार की प्रक्रिया का अध्ययन शामिल होगा और उसके नैतिकता के संदर्भ में प्रभाव का विश्लेषण किया जाएगा। सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं की प्रतिक्रिया और प्रतिक्रिया के प्रति अनुसंधान करें। इसमें उपयोगकर्ता के अनुभवों, धार्मिक और नैतिक मूल्यों के प्रति प्रतिक्रिया का अध्ययन शामिल होगा। ये अनुसंधान क्षेत्र और प्रयोगात्मक अध्ययन सोशल मीडिया

के नैतिकता पर प्रभाव को समझने में महत्वपूर्ण हो सकते हैं। इनके माध्यम से हम सोशल मीडिया के नैतिक मानदंडों को सुधारने और समाधान करने के लिए उपाय तैयार कर सकते हैं।

5. शोध का उद्देश्य (Objective of the Research):

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है सोशल मीडिया के नैतिकता पर प्रभाव को समझना। हम विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्मों और उनके उपयोगकर्ताओं के संबंध में नैतिक मूल्यों की गहरी समीक्षा करेंगे। इस अध्ययन का उद्देश्य है सोशल मीडिया के उपयोग से उत्पन्न होने वाली विभिन्न नैतिक समस्याओं को पहचानना। हम गोपनीयता, फेक न्यूज़, अन्यायपूर्ण विचारधाराओं के प्रसार, और विचार की स्वतंत्रता जैसी मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करेंगे। इस अध्ययन का उद्देश्य है सोशल मीडिया के नैतिक परिप्रेक्ष्य में संभावित समाधानों का प्रस्तावना करना। हम विभिन्न उपायों का अध्ययन करेंगे जो सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्मों, उपयोगकर्ताओं, और समाज को स्थायी और साथिक नैतिकता के संदर्भ में सहायक हो सकते हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य है सोशल मीडिया के नैतिकता के संदर्भ में विचारशील संज्ञान उत्पन्न करना। हम विभिन्न दार्शनिक, नैतिक, और सामाजिक समझ को समेटने का प्रयास करेंगे ताकि हम सोशल मीडिया के उपयोग को समझ सकें और उसे समाधान करने के लिए उपाय तैयार कर सकें। इस प्रकार, सोशल मीडिया और नैतिकतारू एक दार्शनिक अध्ययन के शोध का उद्देश्य सोशल मीडिया के नैतिक परिप्रेक्ष्य को समझने, उसकी समस्याओं को पहचानने, और समाधान के लिए संभावित उपायों का प्रस्तावना करना है।

6. शोध परिकल्पना (Research Hypothesis):

यह अध्ययन सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्मों के नैतिक परिप्रेक्ष्य से प्रभाव को समझने और विश्लेषण करने का प्रयास होगा। हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि सोशल मीडिया कैसे नैतिकता को प्रभावित करता है और कैसे हम इसे सुधार सकते हैं। इस अध्ययन में हम सोशल मीडिया के उपयोग, गोपनीयता, असत्य जानकारी, और न्याय के संदर्भ में नैतिकता के समस्याओं को विश्लेषण करेंगे। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सोशल मीडिया के प्रभाव को नैतिकता के संदर्भ में समझना और उसमें संभावित समस्याओं का पता लगाना है। अध्ययन के नतीजों के आधार पर हम सोशल मीडिया के नैतिकता को सुधारने के लिए उपाय प्रस्तुत करेंगे। ये उपाय नैतिक मूल्यों का समारोह करेंगे और उपयोगकर्ताओं को नैतिक और उचित उपयोग के लिए प्रेरित करेंगे। यह अध्ययन महत्वपूर्ण है क्योंकि सोशल मीडिया ने समाज में गहरे परिवर्तन लाए हैं, और नैतिकता के संदर्भ में उनका प्रभाव भी गहरा है। इस अध्ययन से हम समझ सकते हैं कि कैसे सोशल मीडिया को सही तरीके से प्रयोग करके सामाजिक न्याय और नैतिक मूल्यों को बढ़ावा दिया जा सकता है। इस प्रकार, 'सोशल मीडिया और नैतिकतारू एक दार्शनिक अध्ययन' के शोध का मुख्य उद्देश्य सोशल मीडिया के नैतिकता के संदर्भ में विचार करना, विभिन्न समस्याओं को पहचानना, और समाधान के लिए संभावित उपाय प्रस्तुत करना है।

7. शोध प्रारूप एवं अध्ययन पद्धति (Research Design and Methodology):

इस खंड में अध्ययन का प्रारंभिक परिचय और महत्व का उल्लेख होगा। इसमें शोध के उद्देश्य, प्रश्न, और हाल ही में किए गए शोधों का संक्षेप शामिल होगा। इस अनुच्छेद में पहले से मौजूद शोध और संबंधित स्वाध्यायिक सामग्री का विवरण होगा। इससे पढ़ने वाले ज्ञात करेंगे कि अध्ययन किस क्षेत्र में उत्कृष्टता और नवीनता लाने का प्रयास कर रहा है। इस खंड में, प्राथमिक और गैर–प्राथमिक सामग्री का अध्ययन किया जाएगा। तथ्यांकन और विश्लेषण के लिए सामग्री की सही गणना और विश्लेषण की जाएगी।

इस खंड में, प्रमुख और संवेदनशीलता आधारित अध्ययन के लिए मुख्य प्रश्न तथा प्रयोग किया जाएगा। यह संग्रहालय और आंकड़ों के आधार पर किया जाएगा। इस खंड में, परिणामों की सारांश और उनका महत्व होगा। इससे पढ़ने वाले ज्ञात करेंगे कि अध्ययन के नतीजे क्या हैं और उनका सामाजिक और वैज्ञानिक महत्व क्या है।

सोशल मीडिया परियोजना के लिए, प्रारंभिक अध्ययन में विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्मों, उनके उपयोग, और नैतिकता के संदर्भ में उनके प्रभाव का अध्ययन किया जाएगा। प्राथमिक अध्ययन में, पूर्वाधारित सामग्री जैसे कि पूर्व संशोधन, अध्ययन, अन्वेषण, और अन्य संग्रहालय स्रोतों का अध्ययन किया जाएगा। गैर–प्राथमिक अध्ययन में, इंटरव्यू, सर्वेक्षण, और अन्य तकनीकों का उपयोग किया जाएगा ताकि नई जानकारी और दृष्टिकोण प्राप्त किया जा सके। इस खंड में, संग्रहित डेटा को विश्लेषण किया जाएगा और उसका निष्कर्ष किया जाएगा। यह विश्लेषण सोशल मीडिया और नैतिकता के संदर्भ में अध्ययन के प्रश्नों के समाधान में मदद करेगा। अध्ययन के नतीजों को संदेशित किया जाएगा, और उनके महत्व और प्रभाव की विवेचन की जाएगी। यह संदेशन समय–समय पर परिपूर्ण किया जाएगा।

इस प्रकार, ‘सोशल मीडिया और नैतिकता एक दार्शनिक अध्ययन’ के शोध की प्रारूप और अध्ययन पद्धति अध्ययन के महत्वपूर्ण पहलुओं को ध्यान में रखते हुए तैयार किया जा सकता है।

8. तथ्य संकलन (Tools to be used in the collection of data and analysis):

‘सोशल मीडिया और नैतिकतारू एक दार्शनिक अध्ययन’ के तथ्य संकलन के लिए निम्नलिखित उपाय लिए जा सकते हैं:

1. विभिन्न शोध पेपर, आलेख, और पुस्तकों का अध्ययन करें जो सोशल मीडिया और नैतिकता के बारे में विभिन्न पहलुओं को छूते हैं।

2. विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्मों के नीतियों, गाइडलाइन्स, और उपयोग की शर्तों का अध्ययन करें।

3. नैतिकता और सोशल मीडिया के संबंध में विभिन्न विचारकों और विशेषज्ञों से साक्षात्कार लें।

4. विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्मों पर उपयोगकर्ता डेटा का विश्लेषण करें और उससे नैतिकता के संदर्भ में संग्रह लें।

5. सामाजिक विज्ञानिक अध्ययन के उपाय अपनाकर सोशल मीडिया और नैतिकता के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करें।

6. उपयोगकर्ताओं के बीच नैतिक और नैतिकता संबंधी मान्यताओं, धार्मिकता और नैतिक मूल्यों के संदर्भ में सर्वेक्षण का आयोजन करें।

7. सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्मों पर वास्तविक घटनाओं, घटनाओं, और अन्य संदर्भों के साक्ष्य और आंकड़ों का अध्ययन करें।

8. विभिन्न उपयोगकर्ताओं और नेताओं के व्यक्तिगत अनुभवों का संग्रह करें, जो सोशल मीडिया और नैतिकता के संदर्भ में उपयोगी हो सकते हैं।

इन तथ्यों का संकलन और उनका विश्लेषण ष्सोशल मीडिया और नैतिकतारू एक दार्शनिक अध्ययनष के लिए महत्वपूर्ण होगा ताकि उपयोगकर्ताओं के साथ समाज में नैतिक मूल्यों को प्रोत्साहित करने और सोशल मीडिया के नियमों और नीतियों को सुधारने के लिए सुझाव दिया जा सके।

9. प्रस्तावित कार्य का महत्व (Significance of Proposed Work):

यह अध्ययन सोशल मीडिया के उपयोग के नैतिकता पर प्रभाव को समझने का एक महत्वपूर्ण माध्यम हो सकता है। यह समाज में नैतिक मुद्दों के बारे में चिंतन और चर्चा को बढ़ावा दे सकता है। यह अध्ययन सोशल मीडिया के नैतिकता पर प्रभाव को समझने में मदद कर सकता है। यह उपयोगकर्ताओं की आत्मजागरूकता बढ़ा सकता है कि वे कैसे सोशल मीडिया को उचित तरीके से उपयोग करें। इस अध्ययन के माध्यम से, सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्मों की नीतियों और दिशानिर्देशों की समीक्षा की जा सकती है, और यदि आवश्यक हो, तो सुधार किया जा सकता है। इस अध्ययन के फलस्वरूप, उपयोगकर्ताओं को सोशल मीडिया पर उचित और नैतिक व्यवहार के बारे में शिक्षित किया जा सकता है। यह अध्ययन नैतिकता के संकल्प को समर्थन कर सकता है जैसे कि धर्मिकता, सहानुभूति, और सामाजिक न्याय।इस प्रकार, सोशल मीडिया और नैतिकता एक दार्शनिक अध्ययन के प्रस्तावित कार्य का महत्व सामाजिक नैतिकता और नीतियों को समझने और सुधारने में हो सकता है।

10. वर्तमान ज्ञान में योगदान (Contribution to the Existing Knowledge):

वर्तमान गहनता सोशल मीडिया के उपयोग के प्रभाव को समझने में मदद कर सकता है, जैसे कि यह कैसे सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर व्यक्तिगत और सामाजिक नैतिकता को प्रभावित करते हैं। वर्तमान अनुसंधान सोशल मीडिया पर नैतिक उत्तरदायित्व के मामले में उपयोगकर्ताओं की अदालत करने में मदद

कर सकता है, जैसे कि कैसे नकली खबरों का पता लगाया जाए और असत्य जानकारी को बचाया जाए। वर्तमान अनुसंधान सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्मों की नीतियों की समीक्षा में मदद कर सकता है, जैसे कि यह कैसे निजी जानकारी को संरक्षित रखता है और उपयोगकर्ताओं को ऑनलाइन शोषण से कैसे बचाता है। वर्तमान अनुसंधान यह देख सकता है कि कैसे लोग सोशल मीडिया पर नैतिक निर्णय लेते हैं और कैसे इससे उनके व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन पर प्रभाव पड़ता है। वर्तमान अनुसंधान कैसे सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्मों पर नैतिकता को बढ़ावा दिया जा सकता है, जैसे कि असत्य जानकारी को रोकने के लिए तकनीकी और सामाजिक उपाय।

इन सभी तत्वों का योगदान ष्सोशल मीडिया और नैतिकतारू एक दार्शनिक अध्ययनष में योगदान के रूप में महत्वपूर्ण हो सकता है।

11. अनुसंधान की सीमाएं (Limitations of the Research Work):

अध्ययन की सीमा सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्मों पर हो सकती है, जैसे कि फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, यूट्यूब, आदि। अध्ययन सोशल मीडिया के विभिन्न पहलुओं के संदर्भ में नैतिकता की अध्ययन कर सकता है, जैसे कि गोपनीयता, नकली खबरों का प्रसारण, डिजिटल बाल दोष, आदि।अध्ययन सोशल मीडिया के उपयोग के सामाजिक परिणामों का अध्ययन कर सकता है, जैसे कि उपयोगकर्ताओं के मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक सहजता, और अन्य सामाजिक विकृतियां। अध्ययन सोशल मीडिया पर व्यवहार की सीमा को शामिल कर सकता है, जैसे कि वाणिज्यिक उपयोग, अप्रिय या हानिकारक व्यवहार, आदि। अध्ययन की सीमा विशेष संदर्भ और शोधकर्ता की क्षमता पर निर्भर करेगी। यहां शोधकर्ता को उपलब्ध संसाधनों और समय की सीमा का ध्यान देना होगा। अध्ययन में सोशल मीडिया के उपयोग के प्राचीनतम संदर्भों का भी ध्यान दिया जा सकता है।इन सीमाओं का ध्यान रखते हुए, ष्सोशल मीडिया और नैतिकतारू एक दार्शनिक अध्ययनष का अध्ययन उचित और प्रभावी रूप से किया जा सकता है।

12. भविष्य में कार्य होने की संभावना (Future Work):

लोग अब सोशल मीडिया पर विश्वास के मामले में ज्यादा सजग हो रहे हैं। वे नकली समाचार, असत्य जानकारी और भ्रामक जानकारी के खिलाफ सतर्क रह रहे हैं। इससे सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्मों को भी अपनी नीतियों और प्रक्रियाओं में सुधार करने की आवश्यकता महसूस होगी।

सोशल मीडिया और नैतिकता के बीच संबंध को लेकर लोगों की जागरूकता बढ़ रही है। वे अब अपने उपयोग के प्रति सचेत हो रहे हैं और नैतिकता के मामले में संवेदनशीलता दिखा रहे हैं।

सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्मों को भी अब अपने नीतियों और दिशानिर्देशों में सुधार करने की जरूरत महसूस हो रही है। वे नकली समाचार और असत्य जानकारी के प्रसारण को रोकने और उपयोगकर्ताओं की गोपनीयता की सुरक्षा में सकारात्मक कदम उठा रहे हैं।

वर्तमान और भविष्य में, सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्मों को भी सामाजिक न्याय के मामले में विचार की समानता को बढ़ावा देने की आवश्यकता होगी। वे समाज में नैतिकता और समाजिक मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए अपने नियमों को और व्यवहार को बदल सकते हैं।

इन सभी कारणों से, 'सोशल मीडिया और नैतिकता: एक दार्शनिक अध्ययन' के कार्य के भविष्य में बहुत ही महत्वपूर्ण और संभावित है।

13. सम्भावित अध्याय (Tentative Chapterization):

- **परिचय**
- **प्रथम अध्याय: भारतीय समाचार पत्र का इतिहास एवं प्रेस अधिनियम**
- **द्वितीय अध्याय: सोशल मीडिया पर भारतीय और पश्चिमी दार्शनिकों के नैतिक सिद्धांत**
- **तृतीय अध्याय: सोशल मीडिया एक नए माध्यम के रूप में**
- **चतुर्थ अध्याय: मीडिया के संबंध में नैतिक विचारक और नैतिक सिद्धांत**
- **पंचम अध्याय: आज के समाज में सोशल मीडिया और युवाओं के बीच प्रासंगिकता**
- **उपसंहार**

परिचय

'सोशल मीडिया और नैतिकता: एक दार्शनिक अध्ययन' यह विषय आधुनिक समाज में एक महत्वपूर्ण और विवादास्पद मुद्दा है। सोशल मीडिया का उदय और उसका प्रभाव लोगों के जीवन पर व्यापक है, और इसके साथ ही नैतिकता के मामले में भी नई चुनौतियों को उत्पन्न किया है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सोशल मीडिया के उपयोग के नैतिक मानकों पर प्रभाव को समझना है। यह अध्ययन विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्मों के प्रभाव को जांचेगा, उनकी नीतियों की समीक्षा करेगा, और उपयोगकर्ताओं के नैतिक और सामाजिक व्यवहार को विश्लेषण करेगा। इस अध्ययन में हम विभिन्न समाजशास्त्रीय, दार्शनिक, और नैतिकता के सिद्धांतों को आधार बनाकर सोशल मीडिया के प्रभाव को विश्लेषण करेंगे। हम उपयोगकर्ताओं के धार्मिक, नैतिक, और सामाजिक मूल्यों के प्रति उनकी संवेदनशीलता को समझेंगे और सोशल मीडिया के उपयोग में उत्पन्न नैतिक उत्तरदायित्व का मूल्यांकन करेंगे। इस परिचय के बाद, हम विभिन्न अध्ययन के खंडों में अधिक गहराई से जाएंगे, जैसे कि समस्या का विधान, अनुसंधान की अवधारणा, उद्देश्य, अध्ययन पद्धति, तथ्य संकलन, और नतीजों का विश्लेषण।

प्रथम अध्याय: भारतीय समाचार पत्र का इतिहास एवं प्रेस अधिनियम

भारतीय समाचार पत्र का ईतिहास बहुत प्राचीन है,हम लोग देखे तो रामायण , महाभारत काल में इसका प्रमाण मिलता है। जैसे रामायण का श्रीरामचंद्र और पंछी राज जटाहू का संवाद

"तब कह गीध बचन धरि धीरा। सुनहु राम भंजन भव भीरा ॥ नाथ दसानन यह गति कीन्ही । तेहिं खल जनकसुता हरि लीन्ही ॥

तब धीरज धरकर गोधने यह वचन कहा- हे भव (जन्म-मृत्यु) के भयका नाश करनेवाले श्रीरामजी ! सुनिये। हे नाथ! रावणने मेरी यह दशा की है। उसी दुष्टने जानकीजीको हर लिया है ॥ १ ॥

लै दच्छिन दिसि गयउ गोसाईं । बिलपति अति कुररी की नाईं ॥ दरस लागि प्रभु राखेउँ प्राना । चलन चहत अब कृपानिधाना ॥

हे गोसाईं ! वह उन्हें लेकर दक्षिण दिशाको गया है। सीताजी कुररी (कुर्ज) की तरह अत्यन्त विलाप कर रही थीं। हे प्रभो ! मैने आपके दर्शनोंके लिये ही प्राण रोक रखे थे। हे कृपानिधान! अब ये चलना ही चाहते हैं ॥ २ ॥"[1]

महाभारत में वर्णन हे संजय और धृतराष्ट्र का संवाद

धृतराष्ट्र कहते हैं

"धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः। मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय ॥

धृतराष्ट्र बोले- हे संजय ! धर्मभूमि कुरुक्षेत्रमें एकत्रित, युद्धकी इच्छावाले मेरे और पाण्डुके पुत्रोंने क्या किया ? ॥ १॥"[2]

सञ्जय कहते हैं

"दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा । आचार्यमुपसङ्गम्य राजा वचनमब्रवीत्॥

संजय बोले—उस समय राजा दुर्योधनने व्यूहरचनायुक्त पाण्डवोंकी सेनाको देखकर और द्रोणाचार्यके पास जाकर यह वचन कहा ॥२॥"[3]

नारद मुनि कीभी हमलोग संवाद संचारक के रूप में जान सकते हे।

हमलोग ब्रिटिश सरकार शासन काल में देखे तो 1766 में ब्रेटिश कर्मचारी विलियम बोल्ट्स पहले बार समाचार पत्र प्रकाश के लिए कोसिस करेथे लेकिन उनको अनुमति नहीं मिला। उसके बाद 1780 साल का 30 जनवरी कोलकाता लालबाजार का पास राधामधाब स्ट्रीट से जेम्स अगस्तस हिकी का

मालिकाना और संपादन से प्रकाशित चार पेज टैब्लॉयड साप्ताहिक "The Beangal Gazette or Calcutta General Advertiser " का प्रथम प्रकाशन हुयाथा। इस लिए हिकी को भारतीय समाचार पत्र का पिता मानाजाता हे।

हिकी ने समाचार पत्र को सहज और साहित्य से जोड़कर प्रचार करते थे।हिकी ने अपने विचार को कबिता के मध्यम से ब्यक्त करते थे जैसे

"Go on,good Hicky,in defence of our cause,

Against the invaders of Justice and Laws.

Expose the masks hypocrite,Villains chastise

And render them odious in English man's eyes"(1-8 Dec ,1781)-Hicky Poem

हिकी का प्राकृत उत्तराधिकारी का हिसाबमे कलकत्तां जर्नल संपादक जेम्स सील्ड बाकिनहम के । सरकार अत्याचार, भस्ताचार के विरुद्ध लिखने के कारण बहुत परिषणी में परेथे ,फल शरूप 1 नवंबर 1818 को बंद कर दिया गया था।

भारतवर्ष का अनेक राज्य आंचलिक भाषा में समाचार पत्र प्रकाश के लिए पहले भूमिका निभाई थी समाचार दर्पण और दिग्दर्शन। यह सोचकर कि भाषा में प्रकाशित समाचार पत्रों के माध्यम से ईसाई धर्म का प्रसार करना आसान होगा, उन्होंने मूल भाषा सीखकर भाषा–पत्रकारिता शुरू की। उनके अग्रदूत श्रीरामपुर के बैपटिस्ट मिशनरी थे। उन्होंने भारत में पहली भारतीय भाषा (बांग्ला) पत्रिका दिग्दर्शन और साप्ताहिक समाचार पत्र समाचार दर्पण प्रकाशित किया। (1818, 23 मई) उसके बाद भारत में भ्रमण करने वाले मिशनरियों ने एक–एक करके कई राज्यों से क्षेत्रीय भाषाओं में समाचार पत्र प्रकाशित किये। उदाहरण के लिए, पहले तेलुगु अखबार हितवादी ने कैनेडियन बैपटिस्ट मिशन प्रकाशित किया। 1870 में, पहला कन्नड़ भाषा का समाचार पत्र वृत्तांत पत्रिका मैसूर से ईसाई मिशनरियों द्वारा प्रकाशित किया गया था। 1850 और 1860 के बीच मिशनरियों ने पंजाबी भाषा में समाचार पत्र प्रकाशित किये। फिर 1867 में अख़बार श्री दरबार के नाम से प्रकाशित होने वाला अख़बार भी हिंदू धर्म का प्रचार कर रहा था। पहला असमिया अखबार अरुणोदय 1843 में सिबसागर से प्रकाशित हुआ था। मिशनरियों ने भी यह पत्रिका प्रकाशित की।

19वीं सदी के चार अंग्रेजी अखबार और केवल एक भारतीय भाषा का अखबार अभी भी जीवित है। 19वीं सदी के अंग्रेजी अखबार हैं द टाइम्स ऑफ इंडिया–1838, मेल–1867, द स्टेट्समैन–1875, द हिंदू–1878। स्वदेश मित्रम, एक भारतीय भाषा का तमिल समाचार पत्र, 1880 में प्रकाशित हुआ था। पत्रिका अभी भी चल रही है. स्वतंत्रता के बाद भारत में औद्योगिक विकास, शहरीकरण, साक्षरता दर में वृद्धि ने समाचार पत्र को एक उद्योग बनने में मदद की। आज़ादी उन अख़बारों के लिए बड़े अवसर लेकर आई जो अच्छे प्रबंधन और अच्छे संपादन के कारण आज़ादी तक जीवित रहे। प्रथम प्रेस आयोग की रिपोर्ट (1954) के

अनुसार, भारत में 330 दैनिक समाचार पत्र कई तूफानों से बचे रहे। इनमें से 41 अंग्रेजी में और 289 भारतीय भाषाओं में हैं।

अन्य अखबार जो उपलब्ध हैं उन पर बाद में विस्तार से चर्चा की जाएगी।

भारत में समाचार पत्रों और प्रेस की गतिविधियों को नियंत्रित करने के लिए कई अधिनियम हैं। इनमें से प्रमुख अधिनियमों में से एक है "प्रेस परिषद अधिनियम" (Press Council Act)। इस अधिनियम का उद्देश्य समाचार पत्रों और पत्रकारों के काम की गुणवत्ता और नैतिकता को सुनिश्चित करना है।इसके अलावा, "प्रेस परिषद अधिनियम" के अनुसार, भारत में प्रेस परिषद (च्तमे ब्वनदबपस) भी स्थापित की गई है, जो समाचार पत्रों और पत्रकारों के लिए एक आत्मनिर्धारित संगठन के रूप में कार्य करती है। प्रेस परिषद की मुख्य जिम्मेदारी समाचार पत्रों और पत्रकारों की नैतिकता का पालन करना, उनके अधिकारों की सुरक्षा करना और सार्वजनिक मेंटरिंग करना है।

इसके अलावा, भारतीय संविधान और कई अन्य कानून भी समाचार पत्रों और पत्रकारों को संबंधित कानूनी प्रावधानों का पालन करने के लिए जिम्मेदार बनाते हैं। इस अधिनियम के तहत, प्रेस परिषद के कार्यक्षेत्र में कई कार्यक्षेत्र शामिल हैं, जैसे कि समाचार पत्रों के लिए मानकों का प्रतिष्ठापन, पत्रकारों की प्रशिक्षण, और समाचार पत्रों की आपसी वाद—विवाद के माध्यम से विवादों का समाधान।

प्रेस परिषद आम जनता की शिकायतों का संज्ञान लेता है और समाचार पत्रों और पत्रकारों के खिलाफ उनमें निदेश और सुधार करने की क्षमता रखता है। इसके अलावा, यह संगठन पत्रकारों के अधिकारों की संरक्षा करता है और पत्रकारों को प्रतिबद्धता के साथ काम करने की संविधानिक रक्षा प्रदान करता है।

इस अधिनियम के तहत, प्रेस परिषद के निर्णय और दिशानिर्देशों का मान्यता होता है, और इसका उल्लंघन करने पर उचित कार्रवाई की जाती है। यह सुनिश्चित करता है कि समाचार पत्रों और पत्रकारों के लिए नैतिकता और गुणवत्ता का मानक बनाए रखा जाता है।

द्वितीय अध्यायरू सोशल मीडिया पर भारतीय और पश्चिमी दार्शनिकों के नैतिक सिद्धांत

सोशल मीडिया पर भारतीय और पश्चिमी दार्शनिकों के नैतिक सिद्धांत में अंतर हैं, लेकिन इसके बावजूद कई समानताएँ भी हैं।

भारतीय नैतिक सिद्धांत:

1. भारतीय दार्शनिकों के अनुसार, धर्म, अहिंसा, और सहिष्णुता महत्वपूर्ण हैं। सोशल मीडिया पर व्यक्ति को समर्पितता, सहानुभूति, और समर्थन के माध्यम के रूप में उपयोग करने की प्रेरणा देते हैं।

2. भारतीय नैतिक सिद्धांत में परिवार और समाज में संबंधों का महत्व उच्च माना जाता है। सोशल मीडिया इसे बढ़ावा देता है और लोगों को अपने सम्पर्कों को बनाए रखने और समर्थन प्रदान करने का एक माध्यम प्रदान करता है।

3. सोशल मीडिया पर भारतीय नैतिक सिद्धांत के अनुसार, सामाजिक सेवा और समाज की सेवा करना महत्वपूर्ण है। लोग अपनी सामाजिक सेवाओं की पहचान और प्रशंसा के लिए सोशल मीडिया का प्रयोग करते हैं।

पश्चिमी नैतिक सिद्धांत:

1. पश्चिमी नैतिक सिद्धांत के अनुसार, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और अधिकार महत्वपूर्ण हैं। सोशल मीडिया लोगों को अपनी आवाज को सुनाने और अपने विचारों को व्यक्त करने का एक माध्यम प्रदान करता है।

2. पश्चिमी नैतिक सिद्धांत में व्यापारिकीकरण और व्यापारिक मूल्यों को महत्व दिया जाता है। सोशल मीडिया विपणन, ब्रांडिंग, और व्यापारिक कार्यों के लिए एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

3. पश्चिमी नैतिकता में स्वतंत्र विचार का महत्व माना जाता है, जिसमें लोगों को अपने विचारों और विचारों को स्वतंत्रता से व्यक्त करने का अधिकार होता है। सोशल मीडिया इसे संरक्षित करता है और विभिन्न विचारों और दृष्टिकोणों को समायोजित करता है।

इस तरह, सोशल मीडिया पर भारतीय और पश्चिमी दार्शनिकों के नैतिक सिद्धांतों में कुछ अंतर होते हैं, लेकिन समान उत्कृष्टता और विचारों में समानताएँ भी होती हैं।

तृतीय अध्याय: सोशल मीडिया एक नए माध्यम के रूप में

हां, सोशल मीडिया एक नया माध्यम के रूप में वास्तव में विशेष महत्व रखता है। इसका प्रभाव समाचार, संचार, सामाजिक जीवन, व्यवसाय, और सरकारी नीतियों तक पहुँच गया है।

सोशल मीडिया ने लोगों के बीच संचार को सरल और तेज बना दिया है। इसके माध्यम से लोग अपने विचारों, छवियों, वीडियो, और अन्य सामग्री को साझा कर सकते हैं। सोशल मीडिया ने विश्वभर में समाचार और जानकारी के प्रसार को भी बदला है।

इसके साथ ही, सोशल मीडिया ने लोगों को व्यक्तिगत और सामाजिक मुद्दों पर आवाज उठाने का माध्यम भी प्रदान किया है। यह नए नेताओं को उभारने और समाज में परिवर्तन लाने का भी एक माध्यम बन गया है।

हालांकि, सोशल मीडिया के उपयोग के साथ–साथ, उसके नकारात्मक पहलुओं भी हैं। यह जानकारी का सत्यापन करने में कठिनाई पैदा कर सकता है, और वायरल सामग्री की प्रस्तुति के कारण असत्य खबरों का फैलाव भी हो सकता है। इसके अलावा, सोशल मीडिया का उपयोग व्यक्तिगत जीवन में चिंता, अभिशाप, और अपराधिक गतिविधियों को भी बढ़ा सकता है।

सोशल मीडिया के नए माध्यम के रूप में, हमें इसके सकारात्मक पहलुओं का उपयोग करने के साथ–साथ इसके नकारात्मक पहलुओं को समझने और संभालने की आवश्यकता है।

चतुर्थ अध्याय: मीडिया के संबंध में नैतिक विचारक और नैतिक सिद्धांत

हमारे समाज के कुछ प्रतिष्ठित विचारक और लेखक हमारी सोच प्रक्रिया को एक नए आयाम में चित्रित, परिवर्तित और आकार देते हैं, जो नैतिक सिद्धांतों के अंतर्निहित मूल्यों और सिद्धांतों को गहराई से इंगित कर सकते हैं, जो हमें नैतिक मुद्दों को अलग ढंग से समझने और समझाने में मदद करते हैं। इस अध्याय में मीडिया गतिविधियों के संबंध में पश्चिमी परंपरा के पांच ऐसे केंद्रीय व्यक्तित्वों और तीन मौलिक नैतिक सिद्धांतों पर चर्चा की जाएगी। वे इस प्रकार हैं–

अरस्तू (384–322 ईसा पूर्व)

अरस्तू प्रसिद्ध दार्शनिक एवं विचारक प्लेटो के उल्लेखनीय शिष्य थे। पश्चिमी दर्शन के इतिहास में, वह महान, सम्मानित और प्रख्यात बौद्धिक शख्सियतों में से एक थे। कई नैतिक विचारकों और दार्शनिकों के विचारों और सिद्धांतों को अलग–अलग समय अवधि (जैसे पुनर्जागरण, सुधार, ज्ञानोदय) में या तो संशोधित किया गया या अस्वीकार कर दिया गया। हालाँकि, अरस्तू के विचार, अवधारणाएँ और सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं और दुनिया भर के विभिन्न विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम के एक भाग के रूप में पढ़ाए जाते हैं। न केवल दर्शन की विभिन्न शाखाओं में, बल्कि विज्ञान की विभिन्न शाखाओं (उदाहरण के लिए, जीव विज्ञान, भौतिकी, रसायन विज्ञान और कई अन्य) में भी वे स्वतंत्र रूप से मजबूत पकड़ के साथ घूमते रहे। अरस्तू औपचारिक तर्क के संस्थापक थे, साथ ही उन्होंने नैतिकता पर पहली सैद्धांतिक व्याख्या पेश की थी। अपने निकोमैचियन एथिक्स में, उन्होंने हमें दिखाया कि कैसे तर्कसंगतता का उपयोग करके और दो चरम सीमाओं के बीच संतुलन बनाकर सदाचार का जीवन जिया जाए – मध्य मार्ग अपनाना। इस अध्याय में सदाचार नैतिकता और मीडिया के क्षेत्र में इसके संभावित कार्यान्वयन पर चर्चा की जाएगी।

इमैनुएल कांट (1724–1804)

इमैनुएल कांट, एक प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक, जो एक दंतविज्ञानी के रूप में लोकप्रिय हैं, सदियों से सबसे उल्लेखनीय दार्शनिक हैं। दर्शनशास्त्र के ऐसे बहुत कम पहलू या शाखाएँ हैं जहाँ हमें उनके महत्वपूर्ण

विचार या प्रभाव नहीं मिल सके। अन्य क्षेत्रों के अलावा, वह सबसे प्रमुख नैतिक विचारक थे और यहां उनके नैतिक विचारों और सिद्धांतों और मीडिया में उनके संभावित अनुप्रयोग के बारे में बात की जाएगी।

यहां जिस महत्वपूर्ण बिंदु पर ध्यान देने की आवश्यकता है वह यह है कि कांट का जन्म और जीवन एक बहुत ही महत्वपूर्ण अवधि में हुआ था, जो निश्चित रूप से उनके काम में परिलक्षित हुआ और उन्हें एक आलोचनात्मक विचारक बना दिया। वह साक्षी भी था और आत्मज्ञान का भाग भी; फ्रांसीसी क्रांति भी हुई

उनके जीवनकाल के दौरान. महान दार्शनिक इमैनुएल कांट, जिन्हें हम सब जानते हैं, इसी तरह गढ़े जा रहे थे। कर्तव्य–आधारित नैतिक सिद्धांत उनके नैतिक दृष्टिकोण की नींव या आधार था। उनके लिए, किसी व्यक्ति का कार्य नैतिक मूल्य तभी रखता है, जब वह कर्तव्य के लिए कर्तव्य के दृष्टिकोण से किया जाता है। इसलिए, मकसद प्राथमिक चिंता है, परिणाम नहीं, और काम का कोई विशेष समूह नहीं है जिसे नैतिक कार्य या स्वाभाविक रूप से अच्छा माना जाएगा। कांट के अनुसार, धर्म, परंपरा जैसी कोई बाहरी सत्ता भी श्अच्छेश या श्बुरेश आचरण के संबंध में उचित मार्गदर्शन प्रदान करने में सक्षम नहीं है।

कांटियन नैतिक सिद्धांत और व्यावहारिक स्तर पर इसके निहितार्थ पर चर्चा करने और जानने से पहले इसके कुछ मूलभूत पहलुओं को समझना आवश्यक है। प्राचीन ग्रीस में तीन लोकप्रिय विज्ञान मौजूद थे, अर्थात्– तर्क, भौतिकी और नैतिकता। सभी तर्कसंगत ज्ञान दो प्रकार के होने चाहिए– औपचारिक और भौतिक। ऊपर उल्लिखित इन तीन शाखाओं में, तर्क पूरी तरह से औपचारिक है क्योंकि, तर्क में, कोई अनुभवजन्य भाग नहीं है। इसके विपरीत, भौतिकी और दोनों नैतिकता में अनुभवजन्य के साथ–साथ गैर–अनुभवजन्य या प्राथमिक भाग भी होते हैं। ‘Physics deals with the laws of nature, and ethics with the laws of free moral action’[4] यही कारण है कि पहले को श्प्राकृतिक दर्शनश कहा जा सकता है, जिसके माध्यम से सब कुछ होता है, और बाद में श्नैतिक दर्शनश है जिसकी मदद से सब कुछ होना चाहिए। कांट ने कहा कि नैतिक नियम हमें प्रकृति के नियमों के समान लगते हैं। इस उपरोक्त चर्चा से, यह स्पष्ट है कि कांट ने नैतिकता को दो भागों में विभाजित किया है – एक प्राथमिक या शुद्ध नैतिकता और अनुभवजन्य नैतिकता; इसके अलावा उन्होंने बौद्धिक भ्रम (स्व–हित और कर्तव्य के बीच) और नैतिक पतन से बचने के लिए उन्हें मिश्रण न करने की सख्त सलाह दी क्योंकि इससे व्यवहार में हानिकारक प्रभाव पड़ सकते हैं। कांट के अनुसार, नैतिकता का शुद्ध या प्राथमिक हिस्सा नैतिकता या नैतिक दर्शन की नींव या स्तंभ है, जो है “concerned with the formulation and justification of moral principles”[5]. कांतियन नैतिकता में, श्कर्तव्य के लिए कर्तव्यश नैतिक रूप से सही कार्रवाई निर्धारित करने के लिए प्राथमिक महत्वपूर्ण कारक है, और केवल शुद्ध नैतिकता ही हमें यह समझा सकती है कि कर्तव्य की वास्तविक प्रकृति क्या है। अतरू कांट के नैतिक सिद्धांतों को मीडिया के क्षेत्र में लागू करने से पहले यह ध्यान में रखना चाहिए कि उनके नैतिक सिद्धांत कैसे निकले और उनका आधार क्या है। कांतियन नैतिक

सिद्धांत और मीडिया नैतिकता के लिए इसके संभावित अनुप्रयोग पर इस अध्याय में बाद में चर्चा की जाएगी।

जॉन स्टुअर्ट मिल (1806–1873)

जॉन स्टुअर्ट मिल एक प्रसिद्ध नीतिशास्त्री और प्रभावशाली उदारवादी विचारक थे। बेंथम के बाद उन्होंने उपयोगितावाद को और विकसित किया। यह सिद्धांत मानता है कि पुरुषों को खुशी की तलाश करनी चाहिए। किसी कार्य के सही या गलत होने के मूल्यांकन के लिए खुशी ही एकमात्र मानदंड होना चाहिए। बेंथम खुशी के मात्रात्मक पहलू पर जोर देता है; उन्होंने विभिन्न मानदंडों के आधार पर खुशी को मापने की कोशिश की। इसकी तुलना में, मिल ने आगे बढ़कर दिखाया कि खुशी की मात्रा की तुलना में गुणात्मक पहलू अधिक महत्वपूर्ण है। मिल के सिद्धांत के अनुसार, कार्रवाई के परिणाम का नैतिक मूल्य होगा। यदि कोई कार्य हानिकारक से अधिक सकारात्मक परिणाम उत्पन्न करेगा, तो यह नैतिक रूप से प्रशंसनीय और स्वीकार्य होगा। यहां परिणाम ही अंतिम आधार है किसी भी कार्य का मूल्यांकन करने के लिए खुशी (या उपयोगिता) ही एकमात्र मानदंड है। यह सिद्धांत मीडिया नैतिकता में एक महत्वपूर्ण नैतिक सिद्धांत के रूप में उपयोग किया जाता है और मीडिया व्यवसायी अक्सर कोई भी निर्णय लेने के लिए अपने पेशेवर क्षेत्र में इसका उपयोग करते हैं।

डब्ल्यू. डी. रॉस (1877–1904)

डब्ल्यू डी रॉस एक नैतिक यथार्थवादी थे। उन्होंने विश्वास किया “a system of moral truth, as objective as all truth must be”[6]. इस प्रकार, उसके लिए, सहीपन और अच्छाई वस्तुनिष्ठ विशेषताएं हैं। वह प्रसिद्ध पुस्तक के लेखक हैं–The Right and the Good (1930) । उन्होंने कहा कि एक व्यक्ति अपने नैतिक कर्तव्यों और दायित्वों को स्वयं ही पहचान सकता है; यह उनकी अंतर्निहित क्षमता है। रॉस ने प्रथम दृ ष्टया सात कर्तव्य सुझाये। इन कर्तव्यों को मीडिया व्यवसायियों द्वारा नैतिक दुविधाओं के समय सही और उचित निर्णय लेने के लिए लागू किया जा सकता है। कर्तव्य इस प्रकार हैं-“fidelity, reparation, gratitude, non-malfeasance, justice, beneficence, and self-improvement”[7]. रॉस के लिए, सच्ची नैतिक दुविधा मौजूद नहीं है। किसी विशेष स्थिति में, ये कर्तव्य एक–दूसरे के विपरीत हो सकते हैं, लेकिन उनमें से एक हमेशा सबसे भारी होगा। नैतिक एजेंट (यहां मीडिया व्यवसायी) इस सबसे महत्वपूर्ण प्रथम दृष्टया कर्तव्य की मदद से किसी भी नैतिक दुविधा को आसानी से दूर कर लेंगे। इस प्रकार कोई व्यक्ति कार्रवाई का सही तरीका चुन सकता है, जो उसे उस स्थिति में करना चाहिए। रॉस का सिद्धांत मीडिया नैतिकता में उल्लेखनीय है क्योंकि यह संघर्ष स्थितियों को समझने और उनसे उबरने में मदद करता है, जहां कोई भी निर्णय लेना चुनौतीपूर्ण होगा। मीडिया समाज के हर कोने तक पहुंचता है और उसे विभिन्न नैतिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है; इस प्रकार, यह सिद्धांत मीडिया पेशेवरों को सही विकल्प और निर्णय लेने में मदद करेगा।उदाहरण के लिए, आइए एक स्थिति की कल्पना करें– यदि

कोई मीडिया व्यवसायी किसी भी चीज़ की सही रिपोर्ट करता है, तो यह कुछ लोगों के लिए हानिकारक हो सकता है। अब, उन्हें क्या करना चाहिए? यहां प्रथम दृष्टया दो कर्तव्य (गैर कदाचार और न्याय) एक–दूसरे का खंडन करते हैं, लेकिन एक कर्तव्य दूसरे कर्तव्य पर हावी होता है, वह है– न्याय। रॉस के लिए, यह वास्तविक कर्तव्य5 है। इस प्रकार, इस विशेष उदाहरण में, मीडिया व्यवसायी को तथ्य को सटीक रूप से रिपोर्ट करना चाहिए। "In 1959 A. C. Ewing described Ross's doctrine of prima facie duties as one of the most important discoveries in moral philosophy in the twentieth century"[8]।

जॉन रॉल्स (1921–2002)

जॉन रॉल्स एक प्रसिद्ध राजनीतिक दार्शनिक हैं। उपयोगितावादी दृष्टिकोण की हानियों को पहचानने के बाद उन्होंने एक वैकल्पिक मार्ग प्रस्तावित किया। उपयोगितावादी सिद्धांत में, अल्पसंख्यकों के हितों से हमेशा समझौता किया जाता है, और इसके लिए उन्होंने श्उपयोगिताश को समाज का मूल उद्देश्य नहीं माना; इसके बजाय, उन्होंने अपनी उल्लेखनीय पुस्तक में न्याय की अवधारणा को बढ़ावा दिया–A Theory of Justice (1971) । उन्होंने अपने सिद्धांत की शुरुआत उपयोगिता के विकल्प के रूप में समानता की अवधारणा से की। वह पूंजीवाद को ख़त्म किये बिना समाज से असमानता को दूर करना चाहते थे। इसके लिए सबसे पहले उन्होंने बताया कि समाज में मौजूद असमानताएं क्या हैं और उनमें से कौन सी असमानताएं समाज के सबसे कमजोर वर्ग के लिए हानिकारक हैं। इसके अलावा, उन्होंने कहा कि असमानता एक वास्तविकता है; इसे तभी स्वीकार किया जाएगा जब हम इस असमान वितरण को उचित ठहराएंगे। रॉल्स सामाजिक मूल्यों (जैसे– धन, अवसर, स्वतंत्रता, आय) के उचित वितरण पर जोर देते हैं और ऐसा ही होगा

वितरण के निष्पक्ष सिद्धांत के तहत संभव हो सके। रॉल्स ने उन लोगों के लिए एक विचार प्रयोग का सुझाव दिया जो इन सिद्धांतों को तैयार करेंगे। सामाजिक प्रतिनिधि अपनी सामाजिक स्थिति से अनभिज्ञ रहेंगे; रॉल्स के अनुसार, इस स्थिति को श्मूल स्थितिश कहा जाता है, और इसमें लोग अज्ञानता के पर्दे के नीचे होंगे। यह अज्ञानता केवल उनकी सामाजिक स्थिति की है, पूर्ण अनभिज्ञता की नहीं। इस पद पर वे ऐसे सिद्धांत बनाएंगे जो समाज के हर वर्ग के लिए फायदेमंद होंगे। इस सिद्धांत ने हमें दिखाया कि न्याय हमें सकारात्मक रूप से बांध सकता है। अब सवाल उठेगा– मीडिया नैतिकता में यह सिद्धांत महत्वपूर्ण क्यों है? न्याय, निष्पक्षता की तरह, मीडिया नैतिकता में केंद्रीय विशेषता है। दूसरे, सभी मीडिया पेशेवरों और प्रतिनिधियों (जो मीडिया पेशेवरों के लिए विभिन्न आचार संहिता बनाएंगे) को खुद को अज्ञानता के पर्दे के नीचे रखना होगा ताकि उनकी हर गतिविधि बड़े पैमाने पर समाज के लिए फायदेमंद हो। इसलिए, यह सिद्धांत मीडिया नैतिकता के क्षेत्र में बहुत प्रासंगिक प्रतीत होता है। इस सिद्धांत पर आगे अध्याय पाँच में श्न्यायश खंड के अंतर्गत चर्चा की जाएगी।

पंचम अध्याय: आज के समाज में सोशल मीडिया और युवाओं के बीच प्रासंगिकता

आज के समाज में, सोशल मीडिया और युवाओं के बीच प्रासंगिकता बहुत अधिक है। सोशल मीडिया युवाओं के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है और उनकी दैनिक गतिविधियों में गहराई से संबंधित है। यहाँ कुछ कारण हैं कि सोशल मीडिया युवाओं के बीच कितनी प्रासंगिक है:

सोशल मीडिया युवाओं के लिए संवाद का महत्वपूर्ण माध्यम है। यह उन्हें दोस्तों और परिवार के साथ बातचीत करने, विचार विनिमय करने, और विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में शामिल होने का मौका देता है।

सोशल मीडिया युवाओं को विभिन्न विषयों पर सूचनाएं और विविधता प्रदान करता है। यह उन्हें विशेष दिशाओं में रुचि और उनकी जिज्ञासा को बढ़ावा देता है।

सोशल मीडिया युवाओं को एक—दूसरे के साथ संबंध बनाने और समर्थन प्रदान करने का माध्यम भी प्रदान करता है। यह उन्हें अपने दोस्तों और समुदाय के साथ जुड़े रहने की सुविधा देता है।

सोशल मीडिया युवाओं को अपने सुरक्षित रहकर और अपने विचारों को व्यक्त करके सामाजिक परिवर्तन का अवसर प्रदान करता है। यह उन्हें समाज में अपनी आवाज को सुनाने का माध्यम देता है।

सोशल मीडिया युवाओं को अपने क्षेत्र में उनकी प्रासंगिकता के अनुसार अवसरों की संवेदनशीलता बढ़ाता है। यह उन्हें नौकरी, शिक्षा, और सामाजिक समर्थन के लिए उपयुक्त अवसरों की खोज में मदद करता है।

इस प्रकार, सोशल मीडिया न केवल एक मनोरंजन का साधन है, बल्कि यह युवाओं के लिए एक महत्वपूर्ण सामाजिक, शैक्षिक, और व्यक्तिगत संवेदनशीलता का माध्यम भी है।

उपसंहार

सोशल मीडिया और नैतिकता के संबंध पर यह दार्शनिक अध्ययन हमें यह दिखाता है कि इस नए माध्यम के साथ आने वाले नैतिक चुनौतियों का कैसे सामना किया जा सकता है। सोशल मीडिया न केवल जोड़ने का एक माध्यम है, बल्कि यह एक नई नैतिक दिशा को भी प्रेरित कर सकता है।

इस अध्ययन ने हमें समझाया कि सोशल मीडिया के उपयोग में सावधानी और जिम्मेदारी की आवश्यकता है। यहाँ तक कि यह आपकी नैतिक मूल्यों और अदालत के साथ व्यवहार करने का एक माध्यम भी हो सकता है। इसलिए, हमें सोशल मीडिया का सही तरीके से उपयोग करना सीखने की आवश्यकता है, ताकि हम इसके लाभान्वित हो सकें और साथ ही नैतिक मूल्यों को भी समाप्त न करें।

संदर्भः

1. चतुर्वेदी ,पं. ज्वालाप्रसाद, रामचरित मानस, मानस पारायण प्रचार मण्डल, नई दिल्ली मुख्य वितरक रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार, पृ.605

2. श्रीमद्भागवत गीता, गीता प्रेस गोरखपुर,1923, पृ.14

3. श्रीमद्भागवत गीता, गीता प्रेस गोरखपुर,1923, पृ.14

4. Paton, H. J. (1979). *The Moral Law: Kant's Groundwork of the Metaphysic of Morals*. New Delhi: B.I. Publications. p.13.

5. Paton, H. J. (1979). *The Moral Law: Kant's Groundwork of the Metaphysic of Morals*. New Delhi: B.I. Publications. p.14.

6. Ross, W. D. (2002). *The Right and the Good. Stratton-Lake*, P. (ed.). Oxford: Clarendon Press. p.15.

7. Ibid. p. xxxvii (see Ewing, A. C. (1959). *Second Thoughts in Moral Philosophy*. London: Routledge. p.126.

8. Mintz, S. M. (1996). *"Aristotelian virtue and business ethics education".* Journal of Business Ethics, 15(8). p.827

14. ग्रंथसूची (Bibliography):

1)आधुनिक भारत में पत्रकारिता (अनुवाद)रू अज़ाफ़ाक–उल–आलम, बांग्ला अकादमी, ढाका।

2)जनसंपर्क–नंदलाल भट्टाचार्य, लिपिक।

3)तकनीक–डॉ. बैद्यनाथ भट्टाचार्य, सचिव।

4)दिन की अख़बार चर्चारू ब्रजेंद्रनाथ बनर्जी

5)पत्रकारिता एवं समाचार पत्र विचाररू पार्थ चटर्जी, लिपिका।

6)पत्रकारिता डॉ. पार्थ चट्टोपाध्याय, पूर्व राज्य पुस्तक परिषद्।

7)पत्रिकाओं में बंगाल का सामाजिक चित्रण (भाग 1–4) विनय घोष।

8)पत्रकार केसरी – हरिश्चंद्र मुखर्जी, गौरांग गोपाल सेनगुप्ता। पत्रिकाओं में सामाजिक अध्ययनरू कनाईलाल चटर्जी।

9)विषय पत्रकारितारू डॉ. पार्थ चटर्जी

10)विज्ञापन अध्ययनरू अनिलकुमार रॉयचौधरी, प्रभातकुमार गोस्वामी, पूर्वी राज्य पुस्तक परिषद।

11)भारतीय समाचार पत्रों का विकास और प्रभाव, रू सुजीत रॉय।

12)मीडिया विश्वकोशरू डॉ. पार्थ चटर्जी.

13)रामतनु लाहिड़ी और तत्कालीन बंगाल समाजरू शिवनाथ शास्त्री।

14)बंगाली अखबारों के दो सौ साल,रू कलकत्ता प्रेस क्लब।

15)बांग्ला अखबार और बांग्ला का पुनर्जागरणरू डॉ. पार्थ चटर्जी.

16)समाचार और पत्रकारिता – कृष्ण धर, मीडिया सेंटर पी.बी. सरकार द्वारा संपादित। रिपोर्टिंग

17)समाचार संपादन – सौरिन बनर्जी, पूर्व राज्य पुस्तक परिषद।

18)समाचार पत्रों का संगठन एवं प्रबंधनरू पवित्रकुमार मुखर्जी, रेव्ह. राज्य पुस्तक परिषद्।

19)सार्वजनिक सूचना – पार्थ चटर्जी, पूर्व राज्य पुस्तक परिषद।

20)स्वतंत्रता आंदोलन में जुगांतर पत्रिका का योगदानरू उमा मुखोपाध्याय, हरिदास मुखोपाध्याय।

21)संचार एवं मीडियारू डॉ. बैद्यनाथ भट्टाचार्य, सचिव।

अंग्रेजी सहायक ग्रंथ:

1. A History of Indian Journalism, : Mohit Moitra
2. Global Journalism Arnolds: Debcer.
3. Lillie, W. An introduction to ethics. New Delhi: Allied Publishers.2001.
4. Mill, J. S. Utilitarianism. BN Publishing.2012.
5. New York.Mass media India 1990, 1988 : Research and Reference Division Ministry of I and B, Govt. of India.
6. Oxford Dictionary of Journalism: Tony Harcup
7. Press in India 1990. Ministry of I and B Govt. of India. Responsibility in Mass Communication: William L. Rivers,Wilbur
8. Paton, H. J. The Moral Law: Kant's Groundwork of the Metaphysic of Morals. New Delhi: B.I. Publications. 1979.
9. Report of 1st and 2nd Press Commission।
10. Schramm, Chifford G. Christians. Mass Media Today: Subir Ghosh, Profile Publishers.
11. The Press M. Chalapati Rao.